संथालों का सांस्कृतिक जीवनः एक ऐतिहासिक अध्ययन
(संथाल परगना प्रमंडल के विशेष संदर्भ में)

पीएच.डी पंजीयन हेतु शोध प्रस्ताव

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखण्ड)

शोध निदेशिका

डॉ. संजीदा खातुन

सहायक प्राध्यापिका

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,

धनबाद, झारखण्ड

शोधार्थी

दिपा कुमारी

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,

धनबाद, झारखण्ड

संथालों का सांस्कृतिक जीवनः एक ऐतिहासिक अध्ययन
(संथाल परगना प्रमंडल के विशेष संदर्भ में)

भूमिका(Introduction)

भारतीय संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है जो युगों–युगों से अविरल चलता आ रहा है। यहाँ विविध धर्म, संस्कार, संस्कृति, रहन–सहन आदि अलग–अलग होने के बावजूद परस्पर लोगों में जुड़ाव है। भारत के आदिम बहुल्य राज्य झारखण्ड का संथाल परगना की संस्कृति विविधताओं से परिपूर्ण है। झारखण्ड में 32 प्रकार की जनजाति निवास करते है, जिनमें से 8 आदिम जनजाति की श्रेणी में आते हैं। इस राज्य के राजमहल की तराई क्षेत्र में पहाड़िया आदिम जनजाति निवास करते हैं, जो अपने हठिले स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। प्रारंभ में इन क्षेत्रों में इनका संपूर्ण अधिकार था। वे वहाँ से गुजरने वाले बंजारों से राहदारी शुल्क वसूलते थे। राजमहल का क्षेत्र व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण यहाँ के जनजातियों के लिए आर्थिक महत्व रखता था। लेकिन जब अंग्रेजों को बंगाल की दीवानी प्राप्त हुई तब इन क्षेत्रों पर वे पूर्ण अधिकार करने के लिए उत्साहित हुए, क्योंकि यह व्यापारिक मार्ग पर स्थित था तथा पहाड़िया द्वारा वसूले जा रहे राहदारी से उसे राजस्व हानि हो रही थी। इसी संदर्भ में अंग्रेजों का सामना आदिम पहाड़िया से हुआ, जिसमें उसे आंशिक सफलता ही मिली। पहाड़िया को नियंत्रण में लाने के लिए अंग्रेजों ने संथालों का सहयोग लिया। संथालों का झारखण्ड में प्रवेश बंगाल की ओर से हुआ। संथाल मेहनतकश जनजाति है इसने राजमहल के बंजर भूमि को कुछ ही वर्षों में उर्वर बना दिया। इसी के साथ यह क्षेत्र और भी अधिक आर्थिक महत्व का साबित हुआ। लेकिन संथाल इस आर्थिक समृद्धि को अधिक समय तक उपभोग नहीं कर सके, क्योंकि अंग्रेजों ने अपने राजस्व नीति के तहत इस उर्वर भूमि को अपने प्रशासन के अधीन कर लिया। संथालों को यह समझने में देर न लगी कि अब वे अंग्रेजों के गुलाम है तथा उन्हें उसके अधीन रहकर राजस्व नियमों का पालन करना है। अंग्रेजों के इन गतिविधियों से संथालों में जबरदस्त रोष आया और उसने आदिम पहाड़िया के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करना प्रारंभ कर दिया।

संघर्ष का प्रारंभ जल, जंगल, जमीन और संस्कृति के संरक्षण को लेकर हुआ। यह संघर्ष धीरे–धीरे पूरे संथाल परगना में फैल गया और सभी ने एकजुटता के साथ अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह किया। संथाल परगना के अंतर्गत दुमका, जामताड़ा, देवघर, गोड्डा, पाकुड़, और साहेबगंज जिले आते हैं। संथाल प्रारंभ से ही अपने सांस्कृतिक जीवन को बाहरी संस्कृतियों के साथ समन्वय बैठाकर जी रहे हैं लेकिन बाहरी सांस्कृतिक हस्तक्षेप के कारण संथालों में विभाजन का लक्षण प्रतीत हो रहा है। इन हस्तक्षेपों के बावजूद संथालों का अपनी संस्कृति से घनिष्ठ लगाव है। इनके सांस्कृतिक गतिविधियों के तहत गीत–संगीत, नृत्य, कला, विविध परंपराएँ आदि शामिल है। संगीत और नृत्य उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है। वे विभिन्न अवसरों पर जैसे– विवाह, पर्व–त्योहार, फसलों की बुवाई व कटाई, सामाजिक समारोहों आदि पर पारंपारिक उत्सव मनाते हैं। हस्तकला के क्षेत्र में इन्हें विशेष महारत हासिल है, इनकी कलाकारी बाँस और लकड़ी पर देखने को मिलती है। पारंपारिक चित्रण के अंतर्गत जादोपटिया, सोहराई कोहबर किया जाता है जिसमें प्रकृति और दिन–प्रतिदिन के जीवन के दृश्यों को दर्शाया जाता है। संथालों के द्वारा मनाये जाने वाले कुछ प्रमुख त्योहार– सरहूल, सोहराई, कर्मा, बाहा, दशाइन, सकरात, सेंदरा, बहबगा, दिशूम सेंदरा आदि है। संथालों की सामाजिक संरचना सामूहिक है इसमें पारिवारिक निर्णय घर के बड़े–बुर्जुग लेते हैं। संथाल

जनजाति का साहित्य समृद्ध है संथाली इनकी भाषा है तथा लिपि ओलचिकी, इस लिपि के अविष्कारक पं. रघुनाथ मुर्मू है जो मूलरूप से ओड़िसा राज्य से है।

शोध समस्या(Research Problem):

- झारखण्ड के प्रमुख भौगोलिक इकाईयों में संथाल परगना शामिल है, जिसे विभिन्न स्रोतों में दामिन–ए–कोह के रूप में जाना जाता है। प्रारंभिक देशी–विदेशी यात्रियों के वर्णनों और मध्यकालिन फारसी इतिहास ग्रंथों में इस क्षेत्र को अलग–अलग नामों से जाना गया है।
- संथाल परगना में संथालों का सामाजिक संरचना पितृसत्तामक है, किन्तु महिलाओं का अधिकार अन्य गैर–जनजातीय महिलाओं की अपेक्षा अच्छी है। संथाल समाज में सामाजिक समानता के बावजूद संथाल आर्थिक पिछड़ेपन का शिकार है।
- धार्मिक विषयों पर संथाली पूजा–पद्धति में प्रकृति केंद्रबिंदु में है, लेकिन यह कभी–कभी धार्मिक आडंबर का रूप ले लेता है। प्रारंभ में संथाल जल, जंगल, ज़मीन की पूजा करते थे तथा ईश्वर से संपन्नता की कामना करते थे लेकिन अब धार्मिक रूढ़िवादिता की ओर अग्रसर हो रहे है।
- मोटे अनाज से जीवन–यापन करने वाले संथाल अब डिब्बाबंद खाद्य–पदार्थ को अपने भोजन में शामिल कर रहे है जिससे उनके शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- किसी भी समाज में वेशभूषा संस्कृति का अभिन्न हिस्सा होता है तथा इसे सहेज कर रखना हमारा कर्तव्य है, लेकिन संथाल आधुनिकता की दौड में अपना पारंपारिक परिधान से विमुख हो रहे है।

साहित्य–समीक्षा(Review of Litrature):

शोध कार्य के लिए विविध साहित्यों का अवलोकन किया जाएगा और संबंधित विषयक इतिहासकार के कार्यों से सहायता ली जाएगी। **एल.पी. विद्यार्थी** की **पुस्तक संथाल समाज और संस्कृति**[1] में संथाल समुदाय की संस्कृति, इतिहास, धार्मिक परंपरा और सामाजिक संरचना पर रोचक जानकारी दी गई है। **रामदास अग्रवाल** ने **संथाल समाज**[2] में संथालों की रीति–रिवाजों, परंपरा, सामाजिक संरचना, परिवारिक बनावट और संथालों के जीवन पर गहरी जानकारी दी है साथ ही इस पुस्तक में समाज में परिवर्तन और आधुनिकता के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। **कमल किशोर वर्मा** कृत **संथाल परगनाः इतिहास और संस्कृति**[3] में संथाल परगना पर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक संरचना पर विशेष प्रकाश डाला गया है साथ ही संथाल विद्रोह पर विशेष कार्य किया गया है। **रंजीत कुमार सिंह** ने **संथाल परगना का इतिहास**[4] में संथालों के सामाजिक जीवन में अंग्रेजों की नीतियों की वजह से प्रभावित होने का विवरण दिया है–**'खुली जंगलों में विचरण करने वाले आदिवासी अब अंग्रेजों ने कैसे जकड़ा'**

सी.एच. मैथ्यू ने अपने महत्वपूर्ण कृति **लाइफ ऑफ संथाल ट्राईब**[5] में संथालों की रीति–रिवाजों, परंपरा, सामाजिक संरचना पर प्रकाश डाला है। **द संथालः ए स्टडी इन सोशल चेंज**[6] **– ए.के. शर्मा** ने संथाल जनजाति का सामाजिक संरचना और उसके भूमि संबंधी अधिकार पर औपनिवेशिक शासन का हस्तक्षेप के बारे में चर्चा किए है। **ए.पी. अहमद** ने संथालों के विभिन्न कलाओं पर आधारित अपनी पुस्तक **ट्राईबल आर्ट ऑफ इंडिया**[7] में संथालों के लोककला, भित्ति चित्रकला और पारंपारिक हस्तकला पर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

शोध समस्या का अन्वेषण(Problem to be Investigated):

- संथाल परगना के राजमहल क्षेत्र अपार खनिजों से परिपूर्ण है लेकिन इस क्षेत्र में निवास करने वाले संथाल आर्थिक पिछड़ेपन का शिकार है। इनके विकास के बिना समाज की प्रगति नहीं हो सकती यथा शोध के माध्यम से संभावित संभावनाओं को रेखांकित करना।
- दामिन–ए–कोह के संथाल देश के प्राचीनतम जनजातियों में से एक है, जिसकी सामाजिक जीवन संघर्षमय और उपेक्षित रहा है। सामाजिक न्याय के मामले में संथाल का न्याय व्यवस्था क्षेत्रीय स्तर पर है, जिसे कानूनी मान्यता प्राप्त है लेकिन कानून व्यवस्था हमेशा संथालों के पक्ष में नहीं होता है।
- आर्थिक पिछड़ेपन के कारण संथाल समाज रूढिवादी मान्यताओं एवं रिवाजों में विश्वास करती है। कई बार छोटी–छोटी समस्याओं में झाड़–फूँक, ओझा–गुणी का सहारा लेते है, जिसके परिणाम स्वरूप विकट समस्याओं का सामना करना पड़ता है, को शोध के माध्यम से उजागर करना है।
- पर्व–त्योहार संथालों के लिए खुशी का क्षण है, लेकिन खुशी और जश्न के तलाश में अत्यधिक मदिरा (हड़िया, महुआ) का सेवन करते है। अत्यधिक मदिरापान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
- संथालों के धार्मिक पहचान बाहरी तत्व से प्रभावित हो रही है जिसका प्रमुख कारण है प्रलोभन धर्मांतरण जिसे शोध के माध्यम से समझने का प्रयास किया जाएगा।

शोध का उद्देश्य(Objective of the Research):

- झारखण्ड का संथाल परगना एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र है, जिसका निर्माण जुरासिक काल में हुआ है। इस निर्माण के विभिन्न चरणों का अध्ययन करना शोध का उद्देश्य है।
- संथाल परगना के जिलों में निवास करने वाले संथाल जनजाति का सामाजिक जीवन बड़ी रोचक है जिसे दूसरे समाज के साथ इसके समन्वय का पहचान करना शोध का उद्देश्य है।
- विभिन्न बोंगाओं के पूजा–पद्धति में प्रकृति की महत्व दिखती है जहाँ हर बोंगा एक प्राकृतिक चिन्ह के साथ संबंधित होते है।
- मोटे अनाज– रागी, ज्वार, मडुवा, गोंदली, कुलथी, आदि जैसे भोजन जीवनर्वधक है जो संथाल के भोजन का अभिन्न हिस्सा है। शोध का उद्देश्य होगा कि इसे समाज के दूसरे लोगों के भोजन में कैसे शामिल किया जा सकता है।
- हस्तकला में संथाल माहिर है। वर्तमान समय में गोड्डा, देवघर, दुमका आदि जगहों पर हाथों से बना वस्त्र, बाँस के टोकरी जैसे उपयोगी सामानों को बनाया जा रहा है।

शोध–प्रश्न(Research question):

- झारखण्ड के संथाल परगना का भौगोलिक बनावट कैसा है? तथा विभिन्न भूर्गभिक संरचना कब–कब हुआ?
- औपनिवेशिक काल में संथाल का धार्मिक परिवर्तन एवं वर्तमान समय में सांस्कृतिक परिर्वतन कैसे जारी है?

- धार्मिक मान्यताओं के संबंध में संथाल के रूढ़िवादी गतिविधि ने इसे कैसे जकड़ा है?
- संथाल और गैर–संथालों का पर्व–त्योहार में क्या समानता और भिन्नता है?
- आधुनिक परिधान ने संथाल समाज को किस हद तक प्रभावित किया?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा(Research design & methodology):

प्रास्तावित शोध कार्य में संथाल परगना के संथालों की संस्कृति का अध्ययन किया जाएगा जिसका ऐतिहासिक अध्ययन के लिए तुलनात्मक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक के साथ–साथ वर्णनात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध कार्य को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करने की योजना है।

	भूमिका
प्रथम अध्याय	संथाल परगना का संक्षिप्त भौगोलिक परिचय
दूसरा अध्याय	संथालों का सामाजिक जीवन
तीसरा अध्याय	संथालों का धार्मिक विश्वास एवं मान्यताएँ
चौथा अध्याय	संथाली रीति–रिवाज और रहन–सहन
पाँचवाँ अध्याय	संथालों के सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन
	उपसंहार
	संदर्भ–सूची

डाटा संग्रहण एवं विश्लेषण में उपकरणों का प्रयोग(Tools to be used in the colletion of data and analysis):

प्रस्तावित शोध में मानचित्र, ग्लोब, चित्र, आँकड़ों व एटलस इत्यादि पैमानों की सहायता ली जाएगी। साथ ही संथालों के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन व साक्षात्कार किया जाएगा।

शोध सामग्री ट्राइबल म्यूजियम राँची, राजकीय पुस्तकालय धनबाद, राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, खुदाबक्श ओरियेंटल पुस्तकालय पटना, एशियाटिक सोसाइटी बंबई एवं देश का पहला जिला जामताड़ा के विभिन्न पँचायतों के पुस्तकालय से डाटा संग्रहित किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध कार्य के महत्व(Significance of proposed work):

प्रस्तावित शोध कार्य में संथाल परगना के संथालों के सांस्कृतिक विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। संथालों की संस्कृति झारखण्ड में विशेष महत्व रखता है इसलिए यह शोध अकादमिक रूप से उपयोगी साबित होगा।

झारखण्ड के संथाल परगना के संथालों का सांस्कृतिक अनुसंधान से शोध को बढ़ावा मिलेगा। यह शोध समाजशास्त्रीय अध्ययन में सहायक होगा तथा भावी समय में इस शोध को पुस्तक का रूप दिया जा सकेगा।

समकालीन ज्ञान में योगदान(Contribution of the existing knowledge):

झारखण्ड के सांस्कृतिक इतिहास में संथालों की संस्कृति विविधताओं से भरा है। इनकी संस्कृति की विशिष्टताओं को देखते हुए इसे सिर्फ इन्हीं तक सीमित रखना उचित नहीं है इसे दूसरे संस्कृतियों के साथ समन्वय किया जाना चाहिए। संथाल प्रकृति प्रेमी होते है अतः समाज के अन्य संस्कृति के लोगों को इनसे प्रेरणा मिलेगी।

आधुनिक समाज में पर्यावरण को लेकर अधिक जागरूकता नहीं है वहीं दूसरी ओर संथाल पर्यावरण पूजक है। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में हम संथाल जनजाति से बहुत कुछ सीख सकते है।

शोध का भावी स्वरूप(Aspect of Research work):

प्रस्तावित शोध कार्य से भविष्य में संबंधित विषय पर शोध में सहायता मिल सकेगी। इस शोध का उपयोग संथाल संस्कृति में रूचि रखने वाले लोगों, सामाजिक विज्ञान की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। संथालों की संस्कृति पर व्याख्यानमाला, सेमिनार, चर्चा–परिचर्चा, झांकी, नुक्कड़–नाटक आदि का आयोजन करने में सहायता ली जा सकेगी।

शोध कार्य के जरिए झारखण्ड के दामिन–ए–कोह के उन जगहों में शोध किया जा सकेगा जहाँ अभी तक उस स्तर तक शोध नहीं हो सका है। इससे शोध को बढ़ावा मिल सकेगा तथा इतिहास में संथालों की संस्कृति को रेखांकित किया जाएगा।

संदर्भ–सूची(Related references):

1. विद्यार्थी, एल.पी., *'संथाल समाज और संस्कृति'*, कॉनसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 1976
2. अग्रवाल, राम, दास, *'संथाल समाज'*, के.पी. बागची एण्ड कंपनी, कोलकाता, 1973
3. किशोर, कमल, *'संथाल परगनाः इतिहास और संस्कृति'*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
4. सिंह, रंजीत, कुमार, *'संथाल परगना का इतिहास'*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
5. मैथ्यू, सी.एच., *'लाइफ ऑफ संथाल ट्राइब'*, ऑक्सफोर्ड यूनिर्वसिटी प्रेस, लंदन, 1967
6. शर्मा, ए.के., *'द संथालः ए स्टडी इन सोशल चेंज'*, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1983
7. अहमद, ए.पी., *'ट्राइबल आर्ट ऑफ इंडिया'*, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
8. साहू, एन.के., *'ट्राइबल हेरिटेजः ए स्टडी ऑफ संथाल'*, नोर्दन बुक सेंटर, नई दिल्ली, 1995
9. प्रसाद, ओंकार, *'एंथ्रोपोलॉजी ऑफ साउंड संथाल ट्राइब'*, बी. आर. पब्लिशिंग कॉरपॉरेशन, नई दिल्ली, 2016
10. पाण्डेय, के.बी., *'ट्राइबल फेस्टिबल ऑफ इंडिया'*, एस. चांद एंड कंपनी, नई दिल्ली, 1976
11. शुक्ला, प्रतीभा, *'द डांस ऑफ संथाल'*, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुबंई, 2004

12. दत्ता, आर.सी. *'द संथाल रेबेलियन',* के.पी. बागची एण्ड कंपनी, कोलकाता, 1968
13. चंद्र, हरीश, *'संथाल कल्चरः ए स्टडी ऑफ देयर लाइफ एंड आर्ट्स',* रवीन्द्र प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002